

*reden machen. zu sprechen veranlassen:* भाषयति देवदत्तम् P. 1, 4, 52, Vārtt. 3, Sch. रेवत्युत्तं च पतिनं कुन्दद्वौ समन्ततः । भाषयामास सकृमा वनकन्दरनिर्करम् ॥ Mārk. P. 75, 22. — 2) *sagen, sprechen:* इतोव मन्येत न भाषयेत् MBh. 3, 1698.

— *घनु* 1) *Jmd* (acc.) *nachrufen, zurufen* Çāt. Br. 5, 4, 1, 9. महेभि चरता धर्ममिति वाचानुभाष्य । कन्याप्रदानमभ्यर्च्य प्राज्ञापत्यो विधिः स्मृतः ॥ M. 3, 30. *reden —, sprechen zu* (acc.) R. GORR. 2, 2, 3. Bhāg. P. 3, 21, 33. *sich unterhalten mit* (acc.) R. 2, 30, 36 (47, 27 GORR.), *antworten* R. GORR. 2, 37, 1. *sagen, sprechen:* पञ्चमेवमनुभाषमे 3, 3, 2. स्मरन्मदनुभाषितम् *meine Rede, meine Worte* Bhāg. P. 7, 7, 1. *sprechen von Etwas* (acc.), *vorgeben* MBh. 12, 3286. — 2) *bekennen:* यथा यथा नरो धर्म स्वयं कृतवानुभाषते । तथा तथा त्वेवाहिस्तेनाधर्मेण मुच्यते ॥ M. 11, 228. MBh. 13, 5538. — 3) *Jmds* (acc.) *Worten trauen:* भीमद्वेष्टौ यदा राजा न सम्यगनुभाषते MBh. 3, 1966. — In der Stelle HARIV. 10969 प्रमत्तैर्मधुरैर्वीक्ष्यन्तस्त्वार्यमनु भाषतिः ist *घनु* zum vorhergehenden acc. zu ziehen; die neuere Ausg. liest aber मधु st. घनु. Vgl. अनुभाषण. — *caus.* 1) *sich unterhalten mit* (acc.) R. ed. Bomb. 2, 30, 50 (घनुभाष्य च st. अनुभाषयन् die anderen Ausg.). — 2) *lesen, als Erkl. von अनुवाचय* Schol. zu Çāk. 17, 4.

— *घप* *schmähen:* न केवलं यो मरुतो ऽप्रभाषते ऋणोति तस्मादपि यः स पापभाक् Kumāras. 3, 83.

— *अभि* *anreden, sprechen zu* (acc.) VS. 23, 23. LĀTJ. 3, 3, 3. भोमवत्पूर्वकं त्वेनमभिभाषेन M. 2, 128. 11, 223. N. 3, 11. SUND. 1, 15. BRĀHMAN. 3, 1, N. 3, 16. MBh. 1, 5289. 6181. 3, 2423. 4, 515. HARIV. 4913. R. 2, 9, 19. 12, 48. 78, 23. 92, 2. MĀRĀH. 138, 16. KATHĀS. 33, 63. Bhāg. P. 3, 14, 32. अतस्त्वामभिभाषामि MBh. 3, 16758. 14, 2891. Verz. d. Oxf. H. 238, 6, 2. अन्वोऽन्यमभिभाषतः (कङ्काश्च गृध्राश्च) MBh. 8, 2170. अन्वभाषन्परस्परम् 52. श्रीरभिभाष्यमाणा देव्या 13, 511. मन्त्रिणा पुनरुक्तमाह्वयभाषयिषि Daçak. 116, 2. इति राजा तेनाभिभाषिताः HARIV. 11034 (S. 790). न मादृगी त्वामभिभाषुमर्हति MBh. 3, 15603. अभिभाषितुम् R. 2, 18, 3. *sich unterhalten mit* (instr.) M. 4, 57. 8, 355. *sprechen, mit dem acc. der Sache:* अक्षणा वाणी निरावाधा मधुरा पापवर्जिताम् । स्वागतेनाभिभाषते ते MBh. 13, 6644. वचः RĀGA-TAR. 3, 19. Spr. 2831. यमहताभिभाषितम् *Rede, Worte* Bhāg. P. 6, 2, 1. 17, 36. *Etwas zu Jmd sprechen, mit dopp. acc.* N. 7, 13. R. 2, 37, 1. *Etwas mittheilen, erzählen:* अन्वभाषत तत्सर्वं शि- नितं पुरुषोत्तमात् Bhāg. P. 8, 6, 30. *sprechen von:* न चाभिभाषमे किञ्चिदाकारम् MBh. 12, 13839. एवं चित्तयता तेषां ब्रह्मर्यमभिभाषताम् HARIV. 10353. नृत्पे (नृत्ते ed. Bomb.) वा को ऽभिभाष्यते *genannt, gerühmt* MBh. 13, 809. *verkünden:* जयं चैवाभ्यभाषत R. 1, 28, 13. *bekennen:* एनः M. 11, 103. *sagen, sprechen ohne Object:* अक्रूरो ददते मणिमित्यभिभाषते *so pflegt man zu sagen* NIR. 2, 2. अर्थं तम इत्यभिभाषते 3, 1. N. 3, 3. R. 1, 60, 1. 2, 64, 9. Spr. 1280. KATHĀS. 7, 4. 13, 83. 43, 121. 43, 5. गुणशर्माभिभाषत (sic) 49, 72. RĀGA-TAR. 6, 53. एवमेवाभिभाषतः MBh. 3, 2549. 12, 6363. R. 2, 83, 8. — Vgl. अभिभाषण fig.

— *प्रत्यभि* s. *प्रत्यभिभाषित्*.

— *समभि* *mit einander reden:* उच्चैः समभिभाषतौ MBh. 3, 12697.

— *अव*, *भाषित* *viell. geschmäht* (vgl. अघ) Kām. NĪTIS. 17, 23. अवभाषयत् MBh. 12, 8345 und अवभाषिता 7, 6672 fehlerhaft für अवभास-

यत् und अवभासिता, wie die ed. Bomb. liest. — Vgl. अवभाषण.

— *आ* *anreden, reden zu* (acc.) MBh. 1, 74. अथावभाषे कल्याणी वाचा मधुरया नृपम् 6362. 3, 2765. 4, 60. 12, 308. R. 1, 43, 26. 44, 5 (48, 5 GORR.). 2, 49, 13. SĀH. D. 39, 17. कुरुते नालापमाभाषिता Spr. 1230. *Etwas sagen, sprechen, mittheilen:* उक्तस्य भयाद्राजन्नाभाषते च किं च न MBh. 13, 501. KATHĀS. 17, 84. आभाषित HARIV. 8409. प्रतीपवचनं सख्या सकाभाषते *zur Freundin gewendet sprechen* Spr. 396. mit doppeltem acc.: भर्तृ वक्तुमभाषि रामेण वचः कनीयान् BHATT. 3, 51. *benennen:* घृत्य- धिरित्याभाष्यते Suçr. 1, 128, 9. *sagen, sprechen, ausrufen ohne Object* MBh. 18, 66. RAGH. 6, 82. 14, 44. आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य Mārk. P. 82, 35. — Vgl. आभाष fig.

— *व्या* *anreden, sprechen zu:* व्याभाषयमाणाश्चान्योऽन्यं न मे जीवन्वि- मोक्ष्यते MBh. 3, 15169. व्याभाषितानि *Reden* R. 4, 1, 31. *aussprechen:* दुःखव्याभाषित *schwer auszusprechen* MBh. 13, 4485. 4489. — Vgl. व्याभाषक.

— *समा* *anreden, sagen zu* MBh. 6, 31. 4850. HARIV. 6952. तत्रोपवि- ष्टस्तान्निराभ्यप्राप्नोति यथावयः । समाभाष्य यदुश्चेष्टानुवाच पुरुषोत्तमः ॥ 9037. R. GORR. 2, 108, 37. 4, 10, 23. 6, 16, 1. Bhāg. P. 6, 14, 16. इत्यन्यो- ऽन्यं समाभाष्य MBh. 1, 4198. *mittheilen:* अथाब्रवीन्मधवा प्रत्ययं स्वं स- माभाष्य तम् 13, 4589. — Vgl. समाभाषण.

— *उद्*, *उद्भाषित* MBh. 13, 7302 und PAÑKAR. 4, 3, 30 fehlerhaft für उद्भासित.

— *परि* 1) *Jmd* (acc.) *zusprechen, zureden, admonere* MBh. 1, 4287. 7, 2539. HARIV. 7324. — 2) *anreden* R. 5, 38, 20. — 3) *aussprechen, er- klären:* श्रोकारजननात्तातो मरुत्वं परिभाष्यते GRHJASAMG. 2, 18. शासनं यदि वा श्रुत्वा (so die neuere Ausg.) मय तौ परिभाषितम् u. s. w. HARIV. 4219. पूर्वाचार्याः परिभाषते अन्वपदार्थां ब्रह्मवीक्षिः *lehren* KĀC. zu P. 1, 2, 57. MIT. 268, 11. — Vgl. परिभाषण fig.

— *प्र* *sprechen:* ज्ञानत्रयि — कस्मदेवं प्रभाषमे MBh. 1, 3012. 6677. 2, 1307. 13, 2122. HARIV. 10336. R. 3, 31, 25. 4, 63, 6. 5, 90, 39. Spr. 3383. Kām. NĪTIS. 8, 28. Bhāg. P. 3, 16, 16. 9, 21, 14. यमस्योच्चैः प्रभाषतः MBh. 13, 3476. अप्रभाषत्यः HARIV. 7061. *sagen, sprechen, verkünden, mitthei- len, auseinandersetzen;* mit dem acc. der Sache: सत्यं माता प्रभाषते MBh. 3, 16669. कुशलम् 4, 241. वचनम् HARIV. 12173. R. 2, 98, 17 (107, 7 GORR.). स्थितधीः किं प्रभाषेत BHAG. 2, 54. R. 2, 96, 14. प्रियाणा Spr. 2313. Bhāg. P. 2, 3, 25. VARĀH. BRH. S. 46, 97. करिष्यन्न प्रभाषेत — धर्म- कामार्थकार्याणि *ausplaudern* Spr. 3871. यथाज्ञेया उत्तरात्मा ते तथाज्ञपं प्रभाषते *verkünden, offenbaren* MBh. 3, 41. Bhāg. P. 5, 9, 9. धर्मान् 8, 16. 13. 9, 4, 10. प्रभाष्यते Verz. d. Oxf. H. 63, a. 26. सर्वं साधु सुयुक्तं च भवा- नर्थं प्रभाषते R. 4, 62, 2. वचनं धनदेन प्रभाषितम् *gesprachen* MBh. 3, 11829. 12, 383. 14, 3886. R. 2, 79, 16. हेमवत्पुत्रप्रभाषित *Rede* VARĀH. BRH. S. 68, 7. MBh. 3, 2282. HARIV. 11874 (wo vielleicht प्रभाषितम् zu lesen ist). एवं प्रभाष्यते *wird genannt* Bhāg. P. 3, 11, 14. प्रभाषित *er- klärt* Suçr. 1, 13, 14. *sich unterhalten mit* (acc.): न चाहं पुरुषानन्यान्प्र- भाषयेयं कथं च न MBh. 3, 2599. — Vgl. प्रभाषण fig.

— *संप्र* *sprechen:* त्वयेवं संप्रभाषति MBh. 12, 5836. *sagen —, sprechen zu* (acc.): यथा मां संप्रभाषमे 3, 568. *verkünden, offenbaren, hersagen:* यादृशः पुरुषस्यत्मा तादृशं संप्रभाषमे 41. अस्या देव्याः पतिर्नास्ति यादृशं